Join Telegram-
https://t.me/bhartibhandar

Our Website-
https://thehindipage.com/blog/

Join Telegram-
https://t.me/siddhivinayakpariwarsangaria

Our Youtube Channel-
https://www.youtube.com/channel/UCJlUDM0uPIL7kEO0ZMdDcHg

# कक्षा 12 हिन्दी साहित्य
# अध्याय 02 - तुलसीदास

## वस्तुनिष्ठ प्रश्न

**प्रश्न 1. श्रीरामचरितमानस के रचयिता कौन हैं ?**

(क) कबीरदास
(ख) तुलसीदास
(ग) रैदास
(घ) सूरदास

उत्तर: (ख) तुलसीदास

**प्रश्न 2. मंदोदरी किसकी पत्नी थी ?**

(क) रावण
(ख) कुंभकर्ण
(ग) मेघनाद
(घ) राम

उत्तर: (क) रावण

## अतिलघु उत्तरात्मक प्रश्न

**प्रश्न 1. रावण को लंकेश क्यों कहते हैं ?**

उत्तर: लंका का स्वामी होने के कारण रावण को लंकेश कहा जाता है।

**प्रश्न 2. मंदोदरी ने रावण को किसके बैर न करने की सलाह दी ?**

उत्तर: मंदोदरी ने रावण को राम से बैर न करने की सलाह दी।

**प्रश्न 3. रावण किसका अपहरण करके लाया था ?**

उत्तर: रावण भगवान राम की पत्नी सीता का अपहरण करके लाया था।

**प्रश्न 4. कवि ने श्रीराम और रावण में किस प्रकार का अंतर बताया है?**

उत्तर: कवि ने राम को सूर्य के समान तेजस्वी बताया है और रावण को जुगनू के समान बताया है।

## लघु उत्तरात्मक प्रश्न

**प्रश्न 1. रावण ने सीताहरण क्यों किया ?**

उत्तर: जब वनवास की अवधि बिताते हुए राम, पंचवटी नामक स्थान पर पहुँचे तो उस स्थान की रमणीकता देखकर वहीं कुटी बनाकर रहने लगे। उस वन में रावण के भाई खर और दूषण नाम के राक्षस तथा उसकी बहिन सूर्पनखा भी रहा करती थी। उसने वन में घूमते समय राम और लक्ष्मण को देखा तो उन पर मोहित हो गई। परिस्थितिवश लक्ष्मण ने शूर्पनखा की नाक काट ली। इस पर खर-दूषण ने राम पर आक्रमण कर दिया परन्तु वह राक्षसों सहित मारा गया। शूर्पनखा रावण के पास पहुँची और उसे सीता का अपहरण करने को उकसाया। इसी कारण रावण ने मारीच की सहायता से सीता का अपहरण कर लिया।

**प्रश्न 2. मंदोदरी राम को क्या समझती थी ?**

उत्तर: मंदोदरी एक बुद्धिमती नारी थी। वह रावण के नीति विरुद्ध कार्यों और विचारों से सहमत नहीं थी। जब रावण सीता का अपहरण करके लंका ले आया तो मंदोदरी ने उसे समझाया। वह नहीं माना। इसके पश्चात् हनुमान के लंका आने, अशोक वाटिका उजाड़ने, अक्षय कुमार को मारने तथा लंका का दहन

THE HINDI PAGE जाने कुछ नया www.thehindipage.com

करने से उसे विश्वास हो गया कि राम कोई साधारण मनुष्य नहीं है। जब राम समुद्र पर सेतु बनाकर सेना सहित लंका में पहुँच गए तब तो मंदोदरी का विश्वास और भी दृढ़ हो गया। वह उन्हें साक्षात ब्रह्म का अवतार मानने लगी। उसने रावण को भी यही समझाने का पूरा प्रयास किया परन्तु असफल रही।

**प्रश्न 3. मंदोदरी ने रावण से क्या कहा ?**

उत्तर: मंदोदरी ने हर अनुचित कार्य पर रावण को विनम्रता और प्यार से समझाने की चेष्टा की। जब रावण सीता का हरण कर लाया तो मंदोदरी ने उसे चेताया कि वह सीता तुम्हारे वंश-विनाश का कारण बन जाएगी। इसे शीघ्र लौटा दो। हनुमान के आगमन और उनके द्वारा किए गए विध्वंश को देख, मंदोदरी ने उसे समझाया कि राम कोई साधारण मनुष्य नहीं है। उसने भरसक चेष्टा की कि रावण सीता को सादर लौटाकर राम से मित्रता कर ले। उसने रावण के सामने राम के विश्वरूप का वर्णन करके उसे, राम का पराक्रम और प्रताप बताकर तथा व्यंग्य आदि करके भी समझाना चाहा परन्तु वह अफसल रही और रावण सहित राक्षस कुल का विनाश हो गया।

**प्रश्न 4. निम्नलिखित पंक्ति का भावार्थ लिखिए**

**"निकट काल जेहि आबत साईं।**
**तेहि भ्रम होत तुम्हारिहि नाईं"।।**

उत्तर: जब बार-बार समझाने पर भी रावण राम को साधारण मनुष्य मानने पर अड़ा रहा तो हार कर मंदोदरी ने उससे कहा हे। स्वामी जिसकी मृत्यु निकट आ जाती है, वह तुम्हारी ही तरह भ्रम में पड़ा रहता है। भाव यह है कि रावण का हठ न छोड़ना मंदोदरी को शंकित कर रहा है कि अब पति का विनाश दूर नहीं है।

**निबंधात्मक प्रश्न**

**प्रश्न 1. मंदोदरी द्वारा रावण को दी गई शिक्षा का विस्तार से वर्णन कीजिए।**

उत्तर: जब रावण सीता का अपहरण करके लंका में ले आया और उन्हें अशोक वाटिका में रखा तो मंदोदरी ने उसे समझाया कि वह सीता तुम्हारे राक्षस वंश के विनाश का कारण बनेगी। अतः इसे अपने सचिव के द्वारा आदरपूर्वक राम के पास भिजवा दो। जब मंदोदरी को ज्ञात हुआ कि राम समुद्र पर पुल बनाकर लंका में आ पहुँचे हैं तो उसने फिर रावण को समझाया कि राम कोई साधारण मनुष्य नहीं है। वह विष्णु के अवतार हैं जिन्होंने मधु-कैटभ और महान वीर दैत्यों का संहार किया है। आप और राम में उतना ही अंतर है जितना एक जुगनू और सूर्य में होता है। मंदोदरी ने राम के विश्वरूप का वर्णन करते हुए रावण को समझाया कि राम सचराचर विश्व के स्वामी हैं। अत: उनसे शत्रुता त्याग कर उनकी शरण जाओ तभी तुम्हारे प्राण बचेंगे और मेरा सौभाग्य भी बचा रहेगा।

जब अंगद से अपमानित होकर और पुत्र के वध से व्याकुल होकर रावण राजभवन में लौटा तो मंदोदरी ने उसे समझाया कि वह राम की तुलना में कहीं नहीं ठहरता। उसको उन प्रसंगों का स्मरण कराया जब वह राम का सामना नहीं कर पाया था। सीता स्वयंवर, सीता हरण, शूर्पनखा का अपमान तथा रामदूतों द्वारा किया गया अपमान भी उसे याद दिलायो। मंदोदरी ने पूरा प्रयास किया कि रावण सच्चाई को समझ ले और आत्मविनाश के मार्ग पर न चले, परन्तु रावण ने पत्नी की बातों को कोई महत्व नहीं दिया।

**प्रश्न 2. रावण और मंदोदरी के चरित्र का तुलनात्मक विवेचन कीजिए।**

उत्तर: रावण तथा उसकी पत्नी मंदोदरी के चरित्र एक दूसरे के विपरीत हैं। रावण एक अहंकारी, हठी, युद्ध पिपासु, नीतिविरुद्ध आचरण करने वाला, विलासी और पराक्रमी योद्धा है। उसे अपने बल और वीरता पर

THE HINDI PAGE जाने कुछ नया www.thehindipage.com

बड़ा घमंड है। अपने मुख से अपनी प्रशंसा करने में हितकारी परिजनों की सीख न सुनकर उन्हें अपमानित करने में तनिक भी संकोच नहीं होता। आज्ञाकारिणी, हितभाषिणी पत्नी की सीख भी उसे प्रभावित नहीं कर पाती है।

इसके विपरीत मंदोदरी एक विनम्र, पति का हित चाहने वाली, उचित सीख और परामर्श देने वाली तथा अपने सौभाग्य की अखण्डता के लिए चिंतित रहने वाली पत्नी है। वह अपने पति को अनुचित और अनैतिक कार्यों में रते रहने से रोक तो नहीं पाती किन्तु एक पति का हित चाहने वाली पत्नी के नाते उसे समझाने में कभी पीछे नहीं रहती। मंदोदरी एक बुद्धिमती, विवेकशील, भविष्य को पढ़ने वाली और सजग सहधर्मिणी है। वह एक विदुषी नारी है। उसे राम की परम शक्ति का पूरा ज्ञान है। उसके तर्क, मार्गदर्शन की शैली और ज्ञान, उसे एक विश्वसनीय पत्नी सिद्ध करते हैं। पति के हित को ध्यान में रखते हुए वह रावण को कटु सत्यों से भी परिचित कराती है, व्यंग्य भी करती है। परन्तु दुर्भाग्यवश वह पति रावण को सन्मार्ग पर लाने में सफल नहीं हो पाती।। रावण की मृत्यु के पश्चात् उसका करुण विलाप और कथन, उसके प्रति अत्यन्त सहानुभूति जगाने वाले हैं।

THE HINDI PAGE जहाँ हिन्दी है नया
www.thehindipage.com

## कक्षा 12 हिन्दी साहित्य
## अध्याय 02 - तुलसीदास

### कवि परिचय

हिंदी साहित्य के श्रेष्ठ कवि गोस्वामी तुलसीदास का जन्म विक्रम संवत् 1589 में उत्तर प्रदेश के बाँदा जिले में स्थित गाँव राजापुर में हुआ था ऐसा माना जाता है। तुलसी के पिता का नाम आत्माराम दुबे और माता का नाम हुलसी था। कहते हैं कि अशुभ एवं अभुक्त नक्षत्र में पैदा हुए तुलसी को उनके माता-पिता ने अनिष्ट की आशंका से त्याग दिया था। बाद में स्वामी नरहरिदास ने तुलसी को दीक्षा और रामभक्ति के संस्कार दिए। तुलसी का विवाह विदुषी महिला रत्नावली से हुआ जिसकी मधुर झिड़की से तुलसी

वैराग्य को प्राप्त हुए और रामभक्ति में तीर्थ स्थानों का भ्रमण करते हुए संवत् 1680 में काशी के गंगाघाट पर श्रावण शुक्ल सप्तमी को तुलसी का निधन हुआ।

विद्वानों ने गोस्वामी तुलसीदास द्वारा रचित छोटे-बड़े बारह ग्रंथों को प्रामाणिक माना है - 'दोहावली', 'कवितावली', 'गीतावली', 'रामचरितमानस', 'रामाज्ञा प्रश्नावली', और 'विनयपत्रिका' ये बड़े ग्रंथ हैं तथा 'रामललानहछू, 'पार्वतीमंगल', 'जानकीमंगल', 'बरवै रामायण ', 'वैराग्य संदीपनी और श्रीकृष्णगीतावली' छोटे ग्रंथ हैं। इन सभी रचनाओं में भाव-वैविध्य गोस्वामी जी की सबसे बड़ी विशेषता है। समन्वयवाद तुलसी की भक्ति भावना का सबसे बड़ा गुण है। उनका सारा काव्य समन्वय की विराट् चेष्टा है। उसमें केवल लोक और शास्त्र का ही समन्वय नहीं है - गार्हस्थ्य और वैराग्य का , भक्ति और ज्ञान का, भाषा और संस्कृति का, निर्गुण और सगुण का, पुराण और काव्य का, भावावेग और अनासक्त चिंतन का समन्वय 'रामचरितमानस' के आदि से अंत तक दो छोरों पर जाने वाली पराकोटियों को मिलाने का प्रयत्न है।

THE HINDI PAGE
जाने कुछ नया
www.thehindipage.com

## पाठ परिचय

श्रीरामचरितमानस' को भारतीय जीवन-मूल्यों का समाज-शास्त्र कहा जाता है , जिसमें पारिवारिक प्रेम और मर्यादा के साथ-साथ राष्ट्र-समाज के प्रति मानवीय दायित्वों का वर्णन है।

प्रस्तुत कविता 'श्रीरामचरितमानस' का अंश है, जिसमें मंदोदरी द्वारा समय-समय पर अपने पति रावण को दी गई सीख का वर्णन है। मंदोदरी ने रावण को कई बार समझाया कि राम साक्षात् परमब्रह्म है तथा मर्यादा की पुनःप्रतिष्ठा के लिए धरती पर अवतरित हुए हैं। सीता अपहरण द्वारा श्रीराम का अकारण विरोध करने से निशिचर वंश का नाश होगा , अतः सीता को पुनः श्रीराम को लौटा देना चाहिए मयतनया मंदोदरी राजमहिषी होकर भी नीति विषारद, बहुश्रुता, दूरदर्शी, विवेकशील, वेद-विद्या विदुषी और क्रांतिकारी पतिव्रता है जो अपने पति के कदाचरण , हिंसा और युद्धोन्माद का समय-समय पर विरोध करती है।

रूपवती साम्राज्ञी और अप्रतिम सौंदर्य की प्रतीक मंदोदरी भक्ति की प्रखर चेतना है; जो मोहमाया के मध्य भी परम सत्ता के वैशिष्ट्य का निरंतर निरूपण करती रहती है। तुलसी की दृष्टि में स्त्रियाँ समाज में निरीह, अबला और पददलित नहीं हैं, अपितु वह रावण और बालि जैसे भटके हुए पुरुषों के लिए प्रकाश स्तंभ हैं।

मंदोदरी जैसी पतिव्रता , सत्यनिष्ठ और सुशील नारियाँ हर देश , काल, परिस्थिति और समाज में विद्यमान रही है , किंतु पुरुष अपने अहंकार और पौरुषत्व के दंभ में एक स्त्री और अपनी पत्नी के प्रबोधन को ही तिरस्कृत कर देता है और अंत में रावण जैसा विराट पुरुष भी विनाश को प्राप्त होता है ।

THE HINDI PAGE जाने कुछ नया www.thehindipage.com

# सन्दर्भ एवं प्रसंग सहित व्याख्याएँ

## सुन्दरकाण्ड

**1. कंत करश हरि सन परिहरहू। मोर कहा अति हित हियँ धरह।।**
**समुझत जासु दूत कइ करनी। स्रवहिं गर्भ रजनीचर घरनी।।**
**तासु नारि निज सचिव बोलाई। पठवहु कंत जो चहहु भलाई।।**
**तब कुल-कमल बिपिन दुखदाई। सीता सीत निसा सम आई।।**
**सुनहु नाथ सीता बिनु दीन्हें। हित ने तुम्हार सम्भु अज कीन्हें।।**
**राम बान अहि गर्न सरिस, निकर निसाचर भेक।**
**जब लगि ग्रसंत न तब लगि, जतन करहु तजि टेक।।**

**कठिन शब्दार्थ** – कंत = पति। करश = शत्रुता। सन = से। परिहरहू = त्याग दो। हित = हितकारी , शुभ। हियँ = मन में। करहू = धारण करो , समझो। जासु = जिनके। दूत = संदेश सुनाने या देने वाला (हनुमान)। स्रवहिं = नष्ट हो जाते हैं, गिर जाते हैं। रजनीचर = राक्षस। घरनी = पत्नी। तासु = उनकी। सचिव = मंत्री। पठवहु = भेज दो। कुल कमल विपिन = वंशरूपी कमलों का वन। सीत निसा = शीत ऋतु की रात। हित = भलाई।। संभु = शिव। अज = ब्रह्मा। अहिगन = सर्पों का समूह। सरिस = समान। निकर = समूह। निसाचर = राक्षस। भेक = मेंढक। ग्रसत = पकड़ते , मुँह में दबाते। जतनु = प्रयत्न, उपाय। तजि = त्याग कर। टेक = अभिमान।

**संदर्भ तथा प्रसंग** – प्रस्तुत काव्यांश हमारी पाठ्यपुस्तक सरयू में **रामचरितमानस** के **सुन्दरकाण्ड** से संकलित प्रसंग **'मंदोदरी की रावण को सीख'** नामक पाठ से लिया गया है। इसके रचयिता महाकवि तुलसी दास हैं। इस काव्यांश में हनुमान द्वारा लंका दहन किए जाने के पश्चात् मंदोदरी रावण से अनुरोध कर रही है कि वह सीता को आदर सहित राम के पास भिजवा दें।

**व्याख्या -** गोस्वामी तुलसीदास लिखते हैं कि मंदोदरी अपने पति (रावण) को हाथ जोड़कर नीतिसम्मत वाणी में कहा-हे स्वामी! श्रीराम से विरोध छोड़ दीजिए। मेरे कथन को अत्यन्त हितकर जानकर हृदय में धारण कीजिए। जिन श्रीराम के दूत (हनुमान) के पराक्रमी कार्यों का स्मरण करते हो राक्षसों को स्त्रियों के गर्भ गिर जाते हैं. हे प्रियतम यदि आप भला चाहते हैं तो मन्त्री को बुलाकर उसके साथ उनकी स्त्री (सीता) को वापिस भेजिए। सीता आपके कुल रूपी कमलों के वन को दुःख देने वाली सर्दी की रात के समान आयी है। हे प्रियतम! सुनिये , सीता को लौटाये बिना शिवजी और ब्रह्मा भी आपका भला नहीं कर सकते।

श्रीराम के बाण सर्पों के समान हैं और राक्षसों के समुह मेंढ़कों के समान जब तक सर्परूपी बाण इन मेंढक रूपी राक्षसों को डसा या ग्रस नहीं लेते तब तक या उससे पहले ही अपनी हठ छोड़कर उपाय कीजिये। सीता को वापिस भेजकर राक्षसों का विनाश होने से बचाइये।

**विशेष** –

1- मंदोदरी जान गई है कि राम कोई साधारण मनुष्य नहीं हैं। उनसे बैर करने पर, रावण और राक्षसों का विनाश निश्चित है।
2- स्वयं नारी होने के कारण वह सीता से सहानुभूति भी रखती है। इसी कारण वह रावण से सीता लौटा देने की सीख दे रही है।
3- भाषा साहित्यिक अवधी है।
4- शैली उपदेशात्मक और भावात्मक है।
5- 'कंत करश', 'नारि निज' 'कुल कमल', सीता सीत निसा सम ' में अनुप्रास अलंकार है। 'कुल कमल विपिन' में रूपक तथा 'सीता निसा सम' में उपमा अलंकार भी है।

THE HINDI PAGE
www.thehindipage.com

## लंकाकांड

**2. मंदोदरी सुन्यो प्रभु आयो। कौतुकहीं पाथोधि बँधायो।।**
**कर गहि पतिहि भवन निजआनी। बोली परम मनोहर बानी।**
**चरन नाइ सिरु अंचलु रोपा। सुनहु बंचन पिय परिहरि कोपा।**
**नाथ बयक कीजै ताही सों। बुधि बल सकिअ जीति जाही सों।**
**तुहं रघुपतिहिं अंतर कैसा। खलु खद्योत दिनकरहि जैसा।**
**अतिबल मधु कैटभ जेहिं मारे। महावीर दितिसुत संहारे।**
**जेहि बलि बाँधि सहसभुज मारा। सोइ अवतरेउ हरन महिभारा।।**
**तासु विरोध न कीजिअ नाथा। काल करम जिव जाके हाथा।।**
**रामहिं सौंपि जानकी, नाई कमल पद माथ।**
**सुत कहुँ राज समर्पि बन जाइ भजिअ रघुनाथ।।**

**कठिन शब्दार्थ** – प्रभु = राम। कौतुक ही = खेल-खेल में ही। पाथोधि = समुद्र। कर = हाथ। गहि = पकड़कर। निज = अपने। आनी = लाई। मनोहर = मन लुभाने वाली। नाइ = झुकाकर। अंचलु रोपा = आँचल फैला दिया। परिहरि = त्याग कर। कोप = क्रोध। बयरु = बैर। सकिअ = सको। अंतर = भेद, भिन्नती। खलु = निश्चय। खद्योत = जुगनू (चमकने वाला पतंगा)। दिनकरहिं = सूर्य में। अतिबल = अत्यंत बलवान। मधु-कैटभ = दो दैत्य जिनको भगवान नारायण ने मारा था। तासु = उनका। काल = समय। करम = कर्म या भाग्य। जिब = जीवन। नाइ = झुकाकर। पद = चरण। माथ = मस्तक। सुत = पुत्र। राज = राज्य। समर्पि = सौंपकर। भजिउ = भजन करो।

**संदर्भ तथा प्रसंग** – प्रस्तुत काव्यांश हमारी पाठ्यपुस्तक सरयू में **रामचरितमानस** के **लंकाकांड** से संकलित प्रसंग **'मंदोदरी की रावण को**

**सीख**' नामक पाठ से लिया गया है। इसके रचयिता महाकवि तुलसी दास हैं। इस काव्यांश में मंदोदरी राम को विष्णु का अवतार मानकर उनके बल का

परिचय कराते हुए रावण को समझा रही है कि वह राम से बैर न करके , सीता को लौटा दे।

**व्याख्या** – मन्दोदरी ने जब सुना कि श्रीराम लंका में आ गये हैं और उन्होंने खेल-खेल में समुद्र पर सेतु बांध दिया है , तब वह पति (रावण) का हाथ पकडकर, अपने महल में लाकर परम मनोहर वाणी में बोली। पति के चरणों में सिर नवाकर उसने अपना आँचल पसारा और कहा हे नाथ ! क्रोध त्यागकर मेरा वचन सुनिये। हे स्वामी! वैर उसी से करना चाहिए, जिसे बुद्धि और बल से जीता जा सके । आपमें और श्रीरघुनाथ में निश्चय ही वैसा अन्तर है जैसा जुगनू और सूर्य में है। अर्थात् बल-बुद्धि में आप श्रीराम के सम्मुख एकदम तुच्छ हैं। इस लोक में जिन्होंने (विष्णु रूप में) अत्यन्त शक्तिशाली मधु और कैटभ राक्षसों को मारा , महान् शूरवीर दिति के पुत्रों (हिरण्याक्ष और हिरण्यकशिपु) का (वराह एवं नृसिंह रूप में) संहार किया , जिन्होंने (वामन रूप में) राजा बलि को बाँधा और (परशुराम रूप में) सहस्रबाहु का मारा, वे ही भगवान् पृथ्वी का भार हरण करने के लिए श्रीराम रूप में अवतरित हुए है। है नाथ! आप उनसे विरोध मत कीजिये, जिनके हाथ में काल, कर्म और जीव अर्थात् सम्पूर्ण चराचर है
आप श्रीराम के चरणकमलों में सिर नवाकर , अर्थात् उनकी शरण में जाकर उन्हें सीताजी सौंप दीजिए और फिर पुत्र को राज्य देकर , वन में जाकर श्रीराम का भजन कीजिए।

THE HINDI PAGE जानें कुछ नया www.thehindipage.com

**विशेष** –

1 बुद्धि और बल दोनों में राम का पक्ष प्रबल है। कवि ने मंदोदरी को एक आदर्श पत्नी के रूप में प्रस्तुत किया है।

2 मंदोदरी एक विदुषी नारी है।

3. साहित्यिक अवधी भाषा और तार्किक शैली के द्वारा कवि ने प्रसंग को बड़ा प्रभावशाली बना दिया है।

4. "पिय परिहरि कोपा ', 'खलु खद्योत ' तथा 'काल करम ' में अनुप्रास अलंकार है।

**3. नाथ दीनदयाल रघुराई। बाघउ सनमुख गएं न खाई।।**
**चाहिअ करन सो सब करि बीते। तुम्ह सुर असुर चराचर जीते।।**
**संत कहहिं अस नीति दसानन। चौथेपन जाइहि नृप कानन।।**
**तासु भजन कीजिअ तहँ भर्ता। जो कर्त्ता पालक संहर्ता।।**
**सोइ रघुबीर प्रनत अनुरागी।। भजहु नाथ ममता सब त्यागी।।**
**मुनिवर जतन करहिं जेहि लागी। भूप राज तजि होहिं बिरागी।।**
**सोइ कौसलाधीस रघुराया। आयउ करन तोहि पर दाया।।**
**औं पिय मानहु मोर सिखावन। सुजस होइ तिहुँपुर अति पावन।।**
**अस कहि नयन नीर भरि, गहि पद कंपित गात।**
**नाथ भजहु रघुनाथहिं, अचल होइ अहिबात।।**

**कठिन शब्दार्थ** – बाघउ= बाघ भी। सनमुख = सामने या शरण में। न खाई = नहीं खाता। धरि बीते = कर चुके। सुर = देवता। असुर = राक्षस। चराचर = चेतन और जड़। चौथेपन = वृद्धावस्था में। नृप = राजा। कानन = वन को। तहँ = वहाँ (वन में)। भर्ता = पति। कर्ता = निर्माता, जन्मदाता। भर्ता = पालन करने वाला। संहर्ता = संहार करने वाला। प्रनत = विनम्र , शरणागते। अनुरागी = प्रेम करने वाले। ममता = सांसारिक वस्तुओं में मोह। जतनु =

प्रयत्न। जेहि लागी = जिसके लिए। भूप = राजा। तजि = त्यागकर। विरागी = वैरागी, तपस्वी। कौसलाधीस = कौशल राज्य के स्वामी। रघुराया = राम। आयउ = आए हैं। तोहि पर = तुम पर। दाया = दया। जौ = यदि। सिखावन = सीख, परामर्श। तिहुँ = तीनों लोक। पावन = पवित्र। गहि = पकड़कर। कंपित = काँपता हुआ। गात = शरीर। अचल = स्थायी , अखण्ड। अहिबात = सौभाग्य।

**संदर्भ तथा प्रसंग** – प्रस्तुत काव्यांश हमारी पाठ्यपुस्तक सरयू में **रामचरितमानस** के **लंकाकांड** से संकलित प्रसंग **'मंदोदरी की रावण को सीख'** नामक पाठ से लिया गया है। इसके रचयिता महाकवि तुलसी दास हैं। इस काव्यांश में मंदोदरी रावण को अनेक प्रकार से समझा रही है कि राम की शरण जाने में सभी का कल्याण है। ऐसा करने से रावण की तीनों लोकों में यश फैलेगी और वह अखण्ड सौभाग्यवती हो जाएगी।

**व्याख्या** – तुलसीदास जी कहते हैं कि मन्दोदरी ने रावण से विनयपूर्वक कहा-हे प्रियतम! श्रीराम तो दीनों पर दया करने वाले हैं। सामने जाने पर तो बाघ भी नहीं खाता है , अर्थात् शरणागत का कोई अहित नहीं करता है। आपको जो कुछ करना था, वह सब आप कर चुके। आपने देवता, राक्षस तथा चराचर समस्त जगत् को जीत लिया। हे दशमुख! सन्त जन ऐसी नीति कहते हैं कि चौथेपन (वृद्धावस्था या वानप्रस्थ की आयु) में राजा को वन में जाना चाहिए, अर्थात् वानप्रस्था श्रम अपनाना चाहिए। हे स्वामी ! वहाँ वन में आप उनका भजन कीजिए जो सृष्टि के रचने वाले , पालने वाले और संहार करने वाले ईश्वर हैं। हे नाथ! आप विषय-वासना की आसक्ति छोड़कर उन्हीं शरणागत पर प्रेम करने वाले भगवान् का भजन कीजिए जिनके लिए श्रेष्ठ मुनिजन निरन्तर साधना करते हैं और राजा राज्य त्यागकर वैरागी बन जाते हैं। वही भगवान् कोसलाधीश श्रीराम आप पर दया करने आये हैं। हे नाथ !

THE HINDI PAGE जाने कुछ नया www.thehindipage.com

यदि आप मेरी सलाह मान लेंगे , तो आपका अत्यन्त पवित्र और सुन्दर यश तीनों लोकों में फैल जायेगा । ऐसा कहकर , नेत्रों में करुणा का जल (अश्रु) भरकर और पति के चरण पकड़कर , काँपते हुए शरीर से मन्दोदरी ने कहा हे स्वामी! श्रीरघुपति का भजन कीजिए, जिससे मेरा सुहाग अचल हो जाय।

**विशेष** –

1. विदुषी मंदोदरी आदर्श एवं पतिव्रता चरित्र का पता चलता है।
2. मंदोदरी के वाक्चातुर्य का पता चलता है।
3. भाषा साहित्यिक अवधी है।
4. लोकोक्ति के प्रयोग से कथन को प्रभावशाली बनाया गया है।
5. शैली विवरणात्मक और भावात्मक है।
6. 'सुर असुर चराचर', 'सोई कौसलाधीस' में अनुप्रास अलंकार है।

**4. सजल नयन कह जुग कर जोरी। सुनहु प्रानपति बिनती मोरी।।**
**कंतन राम विरोध परिहरहू। जानि मनुज जो हठ मन धरहू।।**
**विस्वरूप रघुबंस मनि, करहु बच र बिस्वासु।**
**लोक कल्पना बेद कर अंग अंग प्रति जासु।।**

**कठिन शब्दार्थ** –जुग = दोनो। कर = हाथ। कंत = पति। जनि = मत। विस्वरूप = सम्पूर्ण विश्व के स्वरूप , विराट रूप। मनि = मणि। लोक कल्पना = सारे लोक। जासु = जिनके।

**संदर्भ तथा प्रसंग** – प्रस्तुत काव्यांश हमारी पाठ्यपुस्तक सरयू में **रामचरितमानस** के **लंकाकांड** से संकलित प्रसंग **'मंदोदरी की रावण को सीख'** नामक पाठ से लिया गया है। इसके रचयिता महाकवि तुलसी दास हैं।

इस काव्यांश में मंदोदरी रावण को समझा रही है कि वह राम को साधारण मनुष्य ने समझें। राम तो विश्वरूप विराट पुरुष हैं।

**व्याख्या** – स्वामी तुलसीदास वर्णन करते हैं कि नेत्रों में जल भरकर और हाथ जोड़कर मन्दोदरी ने रावण से कहा-हे नाथ! मेरी विनती सुनिये । हे प्राणनाथ! श्रीराम से विरोध करना छोड़ दीजिए। उन्हें सामान्य मनुष्य समझकर मन हठ मत कीजिए। मेरे में इन वचनों पर विश्वास कीजिए कि वे रघुकुल के शिरोमणि श्रीराम विश्वरूप हैं अर्थात सारा विश्व उन्हीं का रूप है। वेद उनके अंग-अंग में सभी लोकों की कल्पना करते हैं अर्थात् वेदों में उनके सर्वव्यापक परमेश्वर रूप का नाना प्रकार से वर्णित हुआ है।

**विशेष** –

1. मंदोदरी एक आदर्श पत्नी के रूप में चित्रित हुई है।
2. श्रीराम के विराट रूप का सुंदर चित्रण है।
3. दोहा-चैपाई छंद की यति-गति भावपूर्ण है।

**5. पद पाताल सीस अजधामा। अपर लोक अँग अँग विश्रामा।।**
**भृकुटि बिलास भयंकर काला। नयन दिवाकर कच घनमाला।**
**जासु घ्रान अस्विनीकुमारा। निसि अरु दिवस निमेश अपारा।।**
**श्रवन दिसा दस बेद बखानी। मारुत स्वास निगम निज बानी।।**
**अधर लोभ जम दसन कराला। माया हास बाहु दिगपाला।।**
**आनन अनल अंबुपति जीहा। उतपति पालन प्रलय समीहा।।**
**रोम राजि अष्टादस भारा। अस्थि सैले सरिता नस जारा।।**
**उदर उदधि अधगो जातना। जगमय प्रभु का बहु कल्पना।।**
**अहंकार सिव, बुद्धि अज मन ससि चित्ती महान।**
**मनुज बास सचराचर रूप राम भगवान।।**

**अस बिचारि सुनु प्रानपति, प्रभु सन बयरु विहाई।।**
**प्रीति करहु रघुबीर पद, मम अहिवात न जाई।।**

**कठिन शब्दार्थ** – प्रति = प्रत्येक। अज धामी = ब्रह्मलोक। अपर = अन्य। भृकुटि बिलास = भौंहों का टेढ़ी होना, क्रोध। काला = मृत्यु। दिवाकर = सूर्य। कच = केश , बाल। घन माला = बादल। घ्रान = नाक। अस्विनी कुमारा = देवताओं के वैद्य। निमेश = पलकों का झपना। श्रवन = कान। बखाना = वर्णन किया है। मारुत = वायु। स्वास = साँस। निगम = शास्त्र। अधर = होंठे। दसन = दाँत। जम = यमराज। कराला = भयंकर। हास = हँसी। बाहु= भुजाएँ। दिगपाला = दिशाओं के रक्षक देवता। आनन = मुख। अनल = अग्नि। अंबुपति = वरुण देव। जीहा = जीभ। उत्पति = उत्पत्ति जन्म। समीहा = कामना, संकल्प। रोम राजि = शरीर के रोंए। अष्टादस = अठारहे। भारा = पुराण अथवा विद्याएँ। अस्थि = हड्डियाँ। सैल = पर्वत। सरिता = नदियाँ। नस जारा = शिराओं या नसों का जाल। उदर = पेट। उदधि = समुद्र। अधगो = शरीर का नीचे का भाग , पैर। जातमा = यम यातना , कष्ट। महान = महतत्व महाभूत। मनुज = मनुष्य। बिहाय = त्याग कर।।

**संदर्भ तथा प्रसंग** – प्रस्तुत काव्यांश हमारी पाठ्यपुस्तक सरयू में **रामचरितमानस** के **लंकाकांड** से संकलित प्रसंग **'मंदोदरी की रावण को सीख'** नामक पाठ से लिया गया है। इसके रचयिता महाकवि तुलसी दास हैं। इस काव्यांश में मंदोदरी रावण को समझा रही है कि वह राम को साधारण मनुष्य ने समझें। राम तो विश्वरूप विराट पुरुष हैं। मंदोदरी ने राम के अंग-अंग में विश्व के विविध पदार्थों, वेद-पुराणों, देवों आदि को स्थित बताया है।

**व्याख्या** – तुलसीदास जी भगवान राम के विराट रूप का वर्णन करते हुए कहते हैं कि मन्दोदरी ने रावण से कहा कि पाताल उन विश्वरूप भगवान् का चरण है, ब्रह्मलोक सिर है, अन्य बीच के सब लोक जिनके भिन्न-भिन्न अंगों पर अवस्थित हैं। भयंकर काल जिनका भृकुटि-संचालन है, सूर्य नेत्र और बादलों का समूह केश हैं। अश्विनी कुमार जिनकी नासिका हैं , रात और दिन जिनके अपार (असंख्य) पलक-फड़कन हैं। दसों दिशाएँ कान हैं , ऐसा वेद कहते हैं। वायु श्वास है और वेद जिनकी अपनी वाणी है। लोभ जिनका अधर (होंठ) है, यमराज भयंकर दाँत हैं, माया हँसी है, दिक्पाल भुजाएँ हैं, मुख अग्नि है, वरुण जीभ है तथा उत्पत्ति , पालन एवं प्रलय जिनकी चेष्टा है। अठारह प्रकार की नाना वनस्पतियाँ जिनकी रोमावली हैं , पर्वत अस्थियाँ हैं , नदियाँ नसों का जाल हैं , समुद्र पेट है और नरक जिनकी नीचे की इन्द्रियाँ (गुप्तेन्द्रियाँ) हैं। इस प्रकार प्रभु श्रीराम विश्वरूप हैं, उनकी इससे अधिक क्या कल्पना की जाय।

शिवजी जिनके अहंकार हैं , ब्रह्मा बुद्धि हैं , चन्द्रमा मन है तथा महान् (विष्णु) उनके चित्त हैं। उन्हीं चराचर रूप भगवान श्रीराम ने मनुष्य रूप में धरती पर निवास किया है। हे प्राणपति! सुनिये , ऐसा विचार कर प्रभु श्रीराम से वैर त्याग दीजिए, उनके चरणों में प्रीति कीजिए, जिससे मेरा सुहाग चला न जाय अर्थात् अचल रहे ।

**विशेष** –

1. मंदोदरी का ज्ञान, सुलझा हुआ सोच तथा राम के प्रति भक्ति भाव इस काव्यांश में उसे एक आदर्श पत्नी सिद्ध कर रहा है।
2. पत्नी होने के नाते वह रावण का परित्याग करके राम की शरण में नहीं जा सकती।
3. साहित्यिक अवधी भाषा का सुंदर प्रयोग हुआ है।

4. काव्यांश में अनुपास, रूपक, उपमा आदि अलंकारों का सहज प्रयोग हुआ है।

**6. साँझ जानि दसकंधर, भवन गयउ बिलखाई।**
**मंदोदरी रावनहिं, बहुरि कहा समुझाई।।**
**कंत समुझि मन तजहु कुमति ही। सोहन समर तुम्हहिं रघुपति ही।।**
**रामानुज लघु रेख खचाई। सोउ नहिं नाधेहु असि मनुसाई।।**
**प्रिय तुम्ह ताहि जितब संग्रामा। जाके दूत केर यह काम।।**
**कौतुक सिंधु नाघि तव लंका। आयउ कपि केहरी असंका।।**
**रखबारे हति बिपिन उजारा। देखत तोहि अच्छ तेहिं मारा।**
**जारि सकल पुर कीन्हेसि छारा। कहाँ रहा बल गर्ब तुम्हारा।।**
**अब पति मृशा गाल जनि मारहु। मोरं कहा कछु हृदय बिचारहु।।**
**पति रघुपतिहि नृपति जनित मानहु। अग जगनाथ अतुत बल जानहु।।**
**बान प्रताप जान मारीचा। तासु कहा नहिं मानेहि नीचा।**
**जनक सभाँ अगनित भूपाला। रहे तुम्हउ बल अतुल बिसाला।।**
**भंजि धनुश जानकी बिआही। तब संग्राम जितेउ किन ताही।।**
**सुरपति सुत जानइ बल थोरा। राखा जिअत आँखि गहि फेरा।।**
**सूपनखा कै गति तुम्ह देखी। तदपि हृदयँ नहिं लाज बिसेखी।।**
**बधि बिराध खर दूसनहिं, लीलाँ हत्यो कबंध।**
**बालि एक सर मारयो, तेहि जानहु दसकंध।।**

**कठिन शब्दार्थ** – साँझ = शाम , संध्या। दसकंधर = रावण। बिलखाई = बिलखकर, शंकर। बहुरि = फिर से। कुमति = कुबुद्धि कुविचार। सोहन = शोभा नहीं देता। समर = युद्ध। रामानुज = लक्ष्मण। लघु = छोटी-सी। रेख = रेखा। खचाई = खींची थी। नाघेह= लाँधी, पार की। असि = ऐसा। मनुसाई

= पुरुषार्थ बल। जितब = जीतोगे। केर = करा। सिंधु = समुद्र। तब = तुम्हारी। कौतुक = खेल में, सहज ही। कपि केहरी = वानरों में सिंह। असंका = बिना किसी भय के। हति = मार कर। विपिन = वन, पुष्पवाटिका। अच्छ = अक्षय कुमार, रावण का पुत्र। पुर = नगर (लंका)। छारा = राख। मृशा = झूठ ही, व्यर्थ। गाल जनि माहु = गाल मत बजाओ, डग मत हाँको। नृपति = राजा। अज जग = जड़ चेतन। अतुल = तुलना रहित। भूपाला = राजा लोग। भंजि = तोड़कर। सुरपति सुत = कौआ वेशधारी इंद्र का पुत्र जयंत , जिसने सीता के चरण पर चोंच मारी थी। जिअत = जीवित। गहि = पकड़कर। सूपनखा = रावण की बहन, जिसकी नाक लक्ष्मण ने काट दी थी। बधि = मार कर। बिराध = एक राक्षस। खर दूसनहिं = खर और दूषण नामक पराक्रमी राक्षस जिन्हें राम ने मारा था। लीलाँ = सहज ही। हत्यौ = मारा। कबंध = एक राक्षस। सर = बाण।

**संदर्भ तथा प्रसंग** – प्रस्तुत काव्यांश हमारी पाठ्यपुस्तक सरयू में **रामचरितमानस** के **लंकाकांड** से संकलित प्रसंग **'मंदोदरी की रावण को सीख'** नामक पाठ से लिया गया है। इसके रचयिता महाकवि तुलसी दास हैं। इस काव्यांश में मंदोदरी अपने पति रावण को समझा रही है कि वह वास्तविकता को स्वीकार करके राम से युद्ध करने की बात भूल जाए। वह राम पर कभी विजय नहीं पा सकता।

**व्याख्या** – लसीदास कहते हैं कि संध्या के समय जब रावण उदास होकर महलों में लौटा तो मन्दोदरी ने फिर रावण समझाते हुए कहा-हे कान्त! मन में समझकर कुबुद्धि छोड़ दो, तुम्हारे और श्रीराम के मध्य युद्ध शोभा नहीं देता है। श्रीराम के छोटे भाई लक्ष्मण ने एक जरा-सी रेखा खींच दी थी , उसे भी आप लाँघ नहीं सके, ऐसा तो आपका पौरुष है! हे प्रिय! क्या आप उन्हें

युद्ध में जीत जायेंगे , जिनके दूत का ऐसा काम है ? खेल-खेल में अर्थात् सरलता से समुद्र को लाँघकर वह वानरों में सिंह अर्थात् बलशाली हनुमान आपकी लंका में निर्भय आया और रखवालों को मारकर उसने अशोक वाटिका को उजाड़ डाला। उसने सम्पूर्ण नगर को जला कर राख कर दिया, उस समय आपके बल का घमण्ड कहाँ चला गया था ? हे नाथ! अब व्यर्थ में गाल मत बजाइये अर्थात् डींगें मत हाँकिये, मेरे कहने पर हृदय में कुछ विचार कीजिए। हे प्रियतम! आप श्रीराम को एक साधारण राजा मत समझिये , अपितु उन्हें चराचर के स्वामी और अतुलनीय बलशाली मानिए। श्रीराम के बाण का प्रताप नीच मारीच भी जानता था, परन्तु आपने उसका कहा भी नहीं माना। राजा जनक की सभा में अगणित राजा उपस्थित थे , वहाँ पर विशाल और अतुलनीय बल वाले आप भी थे, परन्तु शिवजी का धनुष श्रीराम ने ही तोड़ा और सीता से विवाह किया। उस समय आपने उन्हें संग्राम में क्यों नहीं जीता? इन्द्रपुत्र जयन्त उनके बल को कुछ-कुछ जानता है , उसे श्रीराम ने पकड़कर उसकी एक आँख ही फोड़ दी और उसे जीवित ही छोड़ दिया। शूर्पणखा की दशा तो अपने देख ही ली। तो भी आपके हृदय में उनसे युद्ध करने की बात सोचने में कुछ भी लज्जा नहीं आ रही हैं

जिन श्रीराम ने विराध और खर-दूषण को मारकर लीला से ही कबन्ध को भी मार डाला तथा जिन्होंने पराक्रमी बाली को एक ही बाण से मार दिया , हे दशकन्ध! आप उनके बल-पराक्रम को समझिये।

**विशेष** –

1. मंदोदरी ने रावण को सही मार्ग पर लाने के लिए व्यंग्यमयी शैली अपनाई है।
2. रावण स्वयं को बड़ा पराक्रमी समझता था। मंदोदरी ने उसे वे घटनाएँ स्मरण कराई हैं जब उसे राम का सामना करने का साहस नहीं हुआ।
3. भाषा भावानुकूल है। शैली व्यंग्यमयी है।

4. 'कपि केहरी', "अग जग' तथा सुरपति सुत ' में अनुप्रास अलंकार है। 'कपि केहरि' में रूपक अलंकार भी है।

**7. जेहिं जलनाथ बँधायउ हेला। उतरे प्रभुदल सहित सुबेला।।**
**कारुनीक दिनकर कुल केतु। दूत पठायउ तव हित हेतू।।**
**सभा माँझ जेहिं तव बल मथा। करि बरूथ महुँ मृगपति जथा।।**
**अंगद हनुमत अनुचर जाके। रन बाँकुरे वीर अति बाँके।।**
**तेहि कहँ पिय पुनि पुनि नर कहहू। मुधा मान ममता मद बहहू।।**
**अहह कंत कृत राम विरोधा। काल बिबस मन उपज न बोधा।।**
**काल दंड गहि काहु न मारा। हरइ धर्म, बल, बुद्धि बिचारा।**
**निकट काल जेहि आवत साईं। तेहि भ्रम होइ तुम्हारिहि नाईं।**
**दुइ सुत मरे दहेउ पुर, अजहूँ पूर पिय देहु।।**
**कृपा सिंधु रघुनाथ भजि, नाथ बिमल जसु लेहु।।**

**कठिन शब्दार्थ** – जेहिं = जिन्होंने। जलनाथ = समुद्र। बँधायउ = बाँध दिया , पुल बना दिया। हेला = खिलवाड़ में सहज ही। दल = सेना। सुबेला = समुद्र तट। कारुनीक = करुणावान। दिनकर कुल = सूर्य वंश। केतू = ध्वज , श्रेष्ठ। तब = तुम्हारे। हित हेतू = भलाई के लिए। माँहि = में। तवे = तुम्हारा। बल मथा = बल की परीक्षा ले डाली। करि = हाथी। बरूथ = समूह। मृगपति = सिंह। अनुचर = सेवक। बाँकुरे = कुशल। बाँके = टेढ़े वीर। मुधा = व्यर्थ में।

मान = अभिमान। ममता = मोह। मद = अहंकार। अहह = अहा। कृत = किया गया। बिबस = विवश। काल = मृत्यु, विनाश। उपज = उत्पन्न होता है। बोधा = ज्ञान। दण्ड गहि = डंडा लेकर। हरई = हर लेता। साईं = स्वामी। नाई = समान। दहेउ = जल गया। पूर = त्यागना (पिंड छुड़ाना)।

**संदर्भ तथा प्रसंग** – प्रस्तुत काव्यांश हमारी पाठ्यपुस्तक सरयू में **रामचरितमानस** के **लंकाकांड** से संकलित प्रसंग **'मंदोदरी की रावण को सीख'** नामक पाठ से लिया गया है। इसके रचयिता महाकवि तुलसी दास हैं। इस काव्यांश में मंदोदरी रावण को समझाते हुए कह रही है कि उसका विनाश निकट आ गया है। जिससे उसकी बुद्धि भ्रमित हो गई है। वह उसे चेतावनी दे रही है कि वह अब भी अपने हठ और अहंकार को त्याग दे अन्यथा उसका और राक्षसों का विनाश होना अवश्यम्भावी है।

**व्याख्या** – स्वामी तुलसीदास मंदोदरी के मुख से श्री राम का यश गान कराते हुए कहते हैं कि मन्दोदरी ने रावण से कहा जिन श्रीराम ने खेल में ही अर्थात् आसानी से समुद्र को बाँध लिया और जो प्रभु सेना सहित सुबेल पर्वत पर उतर पड़े, उन सूर्यकुल के ध्वजास्वरूप, करुणामय भगवान् आपके ही हित के लिए दूत भेजा। उस दूत ने बीच सभा में आपके बल को उसी प्रकार मथ डला, जैसे हाथियों के झुण्ड में आकर सिंह उन्हें छिन्न-भिन्न कर डालता है। रणबांकुरे ऐसे अंगद , हनुमान आदि जिनके सेवक हैं। हे प्रियतम! ऐसे बलशाली श्रीराम को आप बार-बार साधारण मनुष्य कहते हैं। आप व्यर्थ ही अभिमान, ममता एवं घमण्ड का बोझ ढो रहे हैं। हे प्रियतम! आपने श्रीराम से विरोध कर लिया , क्योंकि काल के वश में होने से आपके मन में अब समझदारी की बात या ज्ञान नहीं उत्पन्न हो रहा है। काल या मौत किसी को दण्ड लेकर नहीं मारती , काल तो धर्म, बल, बुद्धि और सद्विचार को हर लेता है। हे स्वामी ! जिनका काल (मरण-समय) निकट आ जाता है , उसे आप की ही तरह भ्रम हो जाता है। आपके दो पुत्र मारे गये और आपका नगर जल गया। हे नाथ! अब तक जो नुकसान हुआ , उसे सुधारिये और अपनी भूल की पूर्ति कर दीजिए। हे स्वामी! वैर त्यागकर और कृपा के सागर प्रभु श्रीराम को भजकर निर्मल यश प्राप्त कीजिए।

THE HINDI PAGE जान कुछ नया www.thehindipage.com

**विशेष** –

1. बुद्धिमती मंदोदरी, राम और उनके दूतों हनुमान और अंगद का उदाहरण देकर रावण को समझाने का प्रयत्न कर रही है कि वह दो पुत्रों की मृत्यु और लंका दहन को देखकर इस भ्रम को त्याग दे कि राम साधारण मनुष्य हैं।
2. भाषा साहित्यिक अवधी है। कथन शैली प्रबोधात्मक तथा व्यंगात्मक है।
3. मुहावरों तथा लोकोक्ति के प्रयोग से भाव व्यंजना प्रभावी हुई है।
4. 'हित हेतु' 'मुधा, मान, ममता मद' में अनुप्रास अलंकार है। करि वरुथ ….. जथा' में उपमा तथा 'पुनि-पुनि' में पुनरुक्ति प्रकाश अलंकार है।

**8- तव बल नाथ डोल नित धरनी। तेज हीन पावक ससि तरनी।।**
**सेश कमठ सहि सकहिं न भारा। सो तनु भूमि परेउ भरि छारा।।**
**बरून कुबेर, सुरेस, समीरा। रन सन्मुख धरि काहुँ न धीरा।।**
**भुज बल जितेहु काल जम साईं। आज परेहु अनाथ की नाईं।**
**जगत बिदिति तुम्हारि प्रभुताई। सुत परिजन बल बरनि न जाई।।**
**राम बिमुख उस हाल तुम्हारा। रहा न कुल कोउ रोवनिहारा।।**
**तव बस विधि प्रपंच सब नाथा। सभय दिसिप नित नावहिं माथा।।**
**अब तव सिर भुज जंबुक खाहीं। राम विमुख यह अनुचित नाहीं।।**
**काल बिबस पति कहा न माना। अब जग नाथु मनुज करि जाना।।**

**कठिन शब्दार्थ** – डोल = काँपती। धरनी = पृथ्वी। पावक = अग्नि। तरनी = सूर्य। सेश = शेषनाग। कमठ = कछुआ। छारा = धूल। समीरा = पवन देव। विदित = ज्ञात है , पता है। परिजन = परिवारीजन। बरनि = वर्णन करना। रोवनिहारा = रोने वाला , शोक प्रकट करने वाला। बिधि = ब्रह्मा। प्रपंच = सृष्टि, पाँचों महातत्व (भूमि, जल, अग्नि, वायु और आकाश)। सभय

= भयभीत। दिसि = दिशाओं के रक्षक। नावहिं = झुकाते। जंबुक = सियार , गीदड़। अग = यम।

**संदर्भ तथा प्रसंग** – प्रस्तुत काव्यांश हमारी पाठ्यपुस्तक सरयू में संकलित 'रामचरितमानस' के लंकाकाण्ड से संकलित 'मंदोदरी की रावण को सीख ' नामक पाठ से लिया गया है। इसके रचयिता महाकवि तुलसीदास जी है। राम द्वारा संग्राम में रावण का वध होने पर , रावण के शव के निकट बैठी मंदोदरी, उसके बल, प्रताप और धाक का वर्णन करते हुए शोकमग्न होकर विलाप कर रही है।

**व्याख्या**— गोस्वामी तुलसीदास रावण की मृत्यु के पश्चात विलाप करती हुई मंदोदरी का वर्णन करते हैं कि पति का कटा हुआ सिर देखकर मन्दोदरी प्रलाप में कहने लगी हे नाथ! तुम्हारे बल से पृथ्वी सदा काँपती रहती थी। अग्नि, चन्द्रमा और सूर्य भी तुम्हारे सामने तेजहीन थे। शेषनाग और कच्छप भी जिसका भार नहीं सह सकते थे , वही तुम्हारा शरीर आज धूल से सना हुआ धरती पर पड़ा है। वरुण , कुबेर, इन्द्र और वायु, इनमें से किसी ने भी युद्ध में तुम्हारे सामने धैर्य धारण नहीं किया , अर्थात् सब भयभीत रहे। तुमने अपनी भुजाओं के बल से काल और यमराज को भी जीत लिया था , परन्तु ऐसे बलशाली तुम आज अनाथ की तरह पड़े हुए हो। तुम्हारी प्रभुता संसार भर में प्रसिद्ध रही। तुम्हारे पुत्रों एवं परिजनों की शक्ति का वर्णन नहीं किया जा सकता। परन्तु श्रीराम के विमुख होने से ही तुम्हारी ऐसी दुर्दशा हुई कि अब कुल में कोई रोने वाला भी न रह गया , अर्थात् सब मारे गये। पहले विधाता की सारी सृष्टि तुम्हारे वश में थी , सारे लोकपाल सदा भयभीत होकर तुम्हें मस्तक नवाते थे , किन्तु अब तुम्हारे सिर और भुजाओं को गीदड़ खा रहे हैं। श्रीराम के विमुख होने पर ऐसा होना अनुचित नहीं है , अर्थात् भगवान् का विरोध करने पर ऐसा ही फल मिलना था और यही

उचित भी है। हे स्वामी! काल को पूरी तरह वश में करने वाले तुमने किसी का कहा न माना और चराचर के नाथ श्रीराम की साधारण मनुष्य करके जाना, अर्थात् प्रभु श्रीराम के बल-पराक्रम की भारी उपेक्षा की।

**विशेष** –

1. कवि तुलसी दास ने मंदोदरी के माध्यम से राम विरोधियों को गम्भीर संदेश दिया है।
2. राम से बड़ा और उन जैसा दयावान अन्य कोई नहीं है। अत: मनुष्य को राम को ही भजना चाहिए।
3. शैली भावात्मक है। कवि की बहुज्ञता प्रत्यक्ष हो रही है।
4. सुरेस समीरा' 'धाम राम नमामि' में अनुप्रास अलंकार है। 'दनुज कानन ..... हरि' में रूपक तथा उपमा का रोचक सम्मिलन है।

**9- जान्यौ मनुज करि दनुज, कानन दहन पावक हरि स्वयं।**
**जेहि नमत सिव ब्रह्मादि, सुर पिय भजेहु नहिं करुनामयं।**
**आजन्म ते पर द्रोहरत, पापौघमय तव तनु अर्य।**
**तुम्हहूदियो निज धाम, राम नमामि ब्रह्म निरामयं।।**
**अहह नाथ रघुनाथ सम कृपा सिंधु नहिं आन।।**
**जोगिवुद दुर्लभ गति, तोहि दीन्हि भगवान।।**

**कठिन शब्दार्थ** – दनुज = राक्षस। कानन = वन। परदोह = दूसरों से विरोध या बैर रखना। पापौघमय = पापरूपी जल की बाढ़ से पूर्ण, घोर पापी। तनु = शरीर। अयं = यह। निरामयं = दोषरहित , निर्गुण। जोगि वृंद = योगीजन। दुर्लभ = अत्यन्त कठिनाई, प्राप्त होने वाली। गति = परिणाम, अवस्था।

संदर्भ तथा प्रसंग – प्रस्तुत काव्यांश हमारी पाठ्यपुस्तक सरयू में संकलित 'रामचरितमानस' के लंकाकाण्ड से संकलित 'मंदोदरी की रावण को सीख ' नामक पाठ से लिया गया है। इसके रचयिता महाकवि तुलसीदास जी है।

राम द्वारा संग्राम में रावण का वध होने पर , रावण के शव के निकट बैठी मंदोदरी शोकमग्न होकर विलाप कर रही है।

**व्याख्या**— तुलसीदास जी कहते हैं कि मंदोदरी रावण की मृत्यु के पश्चात विलाप करते हुए रावण के शव को संबोधित करते हुए कहती है कि हे प्रियतम! दैत्य रूपी वन को जलाने के लिए अग्निस्वरूप साक्षात् श्रीहरि को तुमने साधारण मनुष्य समझा। शिव और ब्रह्मा आदि देवगण जिन्हें नमस्कार करते हैं , उन करुणामय भगवान् श्रीराम को तुमने नहीं भजा । तुम्हारा यह शरीर जन्म से लेकर मृत्यु तक दूसरों से द्रोह करने में तत्पर तथा पाप-समूह से घिरा रहा। इतना बुरा आचरण करने पर भी उन निर्विकार ब्रह्म ने तुम्हें अपना धाम (ब्रह्मलोक) दिया , मैं उन करुणामय ब्रह्म को प्रणाम करती हूँ हाय नाथ! श्रीरघुनाथ के समान कृपा का सागर दूसरा कोई नहीं है। उन भगवान् ने तुम्हें वह गति दी, जो योगियों को भी दुर्लभ है।

**विशेष-**

1. मंदोदरी के उज्ज्वल चरित्र का चित्रण हुआ है।
2. रूपक परिकर अनुप्रास अलंकार है।
3. छंद कि यति गति उचित है।
4. भाषा सरल सहज प्रवाहमयी भवानुकूल प्रसंगानुकूल साहित्यिक अवधी है।

Join Telegram-
https://t.me/bhartibhandar

Our Website-
https://thehindipage.com/blog/

Join Telegram-
https://t.me/siddhivinayakpariwarsangaria

Our Youtube Channel-
https://www.youtube.com/channel/UCJlUDM0uPIL7kEO0ZMdDcHg